शेख़ फ़रीद – सबद १०३

साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥
आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥
मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥
तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि ॥
वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥
फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कमि ॥१००॥

सार: शरीर कोई स्थायी संपत्ति नहीं है बल्कि एक नाज़ुक संरचना है जो अनगिनत दृश्य और अदृश्य सहारे से टिकी है ताकि उसे क़ायम रखा जा सके जिसे हम 'जीवन' कहते हैं। जो चीज़ हमें अपने-आप में पूरी लगने वाली इकाई लगती है, वह असल में एक अस्थायी ढाँचा है जो अपने आस-पास के माहौल पर निर्भर करता है। जीवन की अनिश्चितताओं से निपटने के लिए, हम उम्मीदों, योजनाओं और मोह-माया से चिपके रहते हैं, हम इन्हें ऐसी यात्रा के लिए ज़रूरी सामान मान लेते हैं जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। इससे एक विरोधाभास पैदा होता है, नश्वर शरीर उस भविष्य को थामे रखने की कोशिश करता है जो अनिश्चित है क्योंकि जीवन का हर क़दम उधार पर टिका है। समझदारी तब है जब कोई जीवन की यात्रा हल्के-फुल्के ढंग से करता है क्योंकि जीवन को स्थायी रूप से थामे रखने का उद्देश्य कभी था ही नहीं।

साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥
यह शरीर, जो सीमित मात्रा में मांस से बना है, पानी और भोजन के सहारे ही चलता है। यह उजागर करता है कि शरीर कोई स्थायी चीज़ नहीं बल्कि एक नाज़ुक संरचना है जो जीवित रहने के लिए बाहरी संसाधनों पर निर्भर है।

आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥
मनुष्य इस दुनिया में आता है और आते ही अपने पालन-पोषण की आशाओं का गट्ठर बांध लेता है। यह दर्शाता है कि कैसे हमारा मन जीवन की यात्रा में अपेक्षाओं को एक अनिवार्य बोझ की तरह थामे रहता है।

मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥
जब विनाश के रूप में मौत का फ़रिश्ता आता है तब वह हर दरवाज़े को तोड़ देता है। यह संकेत करता है कि जब मृत्यु की परम वास्तविकता हमारे सामने आती है तब हमारे सभी बाहरी बचाव और हमारे भीतर का अहंकार व अहं ढह जाते हैं।

तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि ॥
अपने प्यारे साथियों और रिश्तेदारों की मौजूदगी में, उसे बाँध दिया जाता है। यह दिखाता है कि सबसे मज़बूत बंधन भी अंततः प्रकृति के नियमों के आगे झुक जाते हैं।

वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥
देखो, मनुष्य कैसे चला जाता है, जिसे चार लोग अपने कंधों पर उठाकर ले जाते हैं। यह दृश्य हमारी पहचान की कमज़ोरी और मृत्यु की निश्चितता को दिखाता है, जिस शरीर ने कभी अपने अहंकार में इतराया था, उसे अंततः दूसरे लोग ही अंतिम विश्राम-स्थल के लिए ले जाते हैं।

फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कमि ॥१००॥
फ़रीद कहते हैं कि इस दुनिया में हम जो कर्म करते हैं, वही हमारी अंतरात्मा के न्याय में मायने रखते हैं। इसका अर्थ है कि जो चीज़ हमेशा बनी रहती है, वह हमारे कर्मों की विरासत और हमारे इरादों की सच्चाई है। (१००)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद पहचान की नश्वरता और मृत्यु की अनिवार्यता को बड़े ही सशक्त ढंग से दर्शाते हैं, यह घमंडी शरीर अंततः दूसरों द्वारा ही अंतिम विश्रामस्थल तक जाता है जिससे इसकी कमज़ोरी स्पष्ट हो जाती है। भौतिक अस्तित्व से दूर, जो चीज़ वास्तव में क़ायम रहती है, वह न तो सामाजिक रुतबे की पहचान है और न ही हमारी अपनी छवि, बल्कि हमारे कर्मों का प्रभाव और हमारे इरादों की सच्चाई है। मृत्यु केवल जीवन का अंत ही नहीं करती, बल्कि वह इस बात की भी परीक्षा लेती है कि वास्तव में क्या अर्थपूर्ण है। शरीर भले ही शांत हो जाए लेकिन जीवन कैसे जिया, उसका सार गूंजता रहता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com